%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 178

No. 117

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Siṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI. No. 1142; A. R. No. 861 of 1899;

I. M. P. Vol. III P. 1685, No. 189 )

Ś 1190

(१।) ॐ । लीलावराद्दरूपो वः कल्याणमभिवर्ष्ष-

(२।) तु । यं प्राप्य धरणी नित्यमालिंगनसु-

(३।) खं ददौ ।। [१] शाकाब्दे व्योम-रत्न-क्षिति-शशिगणि

(४।) ते कात्तिके मासि शुक्ले पंचम्या[ं]<2> जीववारे

(५।) नरहरिभवने पंचचत्वारिमाढ़ान् ।।

(६।) प्रादादख्ताइ सेनापतिरमल य-

(७।) शाः पुष्ववाटिनिमित्त न्नित्य न्नानावि-

(८।) चित्रैः फलकुसुमदलैरर्च्चनार्त्थ

(९।) हरेस्सः ।। [२] स्वस्ति श्री [।।] शकवर्षवुलु ११-

(१०।) ९० अगुनेंटि कात्तिंक शुक्ल पंचमियु वृ-

(११।) हम्पतिवारमुनांडु वीरश्रीनरसिंह-

(१२।) देवरु<3> श्रीनरसिंहनाथदेवरकु नल्लराति

(१३।) श्रीविमानमु कट्टिंप नियोगिंचिन

<1. On the fifty-fifth pillar, to the left of the Padmanidhi, of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 11th October, 1268 A. D. Thursday. The 5th tithi started from about 4 P. M.>

<3. Narasimha I ruled from A. D. 1238-9 to A. D. 1264-5. After him, his son Bhānudeva I came to the throne and ruled upto A. D. 1278-9. So, there was no king Narasimha by name at the time when this inscription was incised. Probably, Narasimha I started the construction of the Vimāna which was completed after his death, in A. D. 1268.>

%%p. 179

(१४।) अख्ताई सेनापति राजुल आज्ञायंद् श्री-

(१५।) विमानमु नल्लरात काट्टि कलशनिर्व्वा(र्मा)णमु

(१६।) चेशि मुखमडपमु नाट्टयमंडप-

(१७।) म् तिरुचुट्ट माल्य कट्टिचिन धेनक

(१८।) प्रतिदिनमु श्रीनरसिहनाथदेवर

(१९।) कु तन धर्म्मुगा नाराधिप पुष्पवा-

(२०।) टिककु अदावरमुन चेरुलो पुट्टंडु सेनु-

(२१।) न्नु ई तोंट शेशेडि दासर्ल्लु नालुवुरुन्लु

(२२।) पूविलु अलमालकारलु ईद्दरुं-

(२३।) गा वेल्लु आरु वीरकु कूडुजीतनिमि-

(२४।) त्तमु नरुचेरुवेनक आरु पुट्टु-

(२५।) लु शेनुन्नुंगा पुट्ट्लु एडिटिकि तन ध-

(२६।) र्म्मोपार्ज्जि[त] द्रव्यमु गड नलुपै ए-

(२७।) नु माडलु श्रीभंडारा(र) प्रवेशमु शेशि

(२८।) देवरचे कृ(क्र)यमुगोनि आचंद्रार्क्कस्त(स्था)इ-

(२९।) चेल्लगलइधि पेट्टे । ई तोंट परि-

(३०।) क्षगा नरहरिमंच नन्न अत्तुदेवरा-

(३१।) जुन्नु पेट्टि वीरिकि कूडुजीतान कु-

(३२।) म्मरुपल्लि पुट्टिन्नि ओड्डधिपुट्टिकि कालो-

(३३।) चितमूल्यमु पेट्टि विलिचि वीरिकि

(३४।) धर पोशि आचंद्राक(क)स्थाइ चेल्ल गलय-

(३५।) दिगा निच्चे ।। ई धर्म्म श्रीवैष्णव रक्ष ।।

(३६।) लिखितमिदं पेरुमांडिपंडि-

(३७।) तेन ।। श्री श्री श्री ।।